गांधीवादी सर्वोदय दर्शन: सामूहिक विकास के लिए आधुनिक कार्यस्थलों की पुनर्कल्पना

डॉ. शिलादित्य वर्मा*
डॉ. अमित कुमार तिवारी**

सारांश -

आधुनिक विश्व तीव्र गति से बदल रहा है, जो लोगों की सोच और कार्य करने के तरीके को प्रभावित कर रहा है। यह "मैं-पहले" दृष्टिकोण समाज में अनावश्यक दबाव और अवास्तविक अपेक्षाएँ उत्पन्न कर रहा है, जिससे न केवल सामाजिक ढांचे बल्कि कार्यस्थलों पर भी प्रभाव पड़ रहा है। तकनीकी प्रगति इन मुद्दों को और अधिक गहरा बना रही है, क्योंकि आधुनिक कार्यस्थलों में व्यक्तिगत स्वार्थ और प्रतिस्पर्धा की भावना बढ़ती जा रही है। बीसवीं शताब्दी की शुरुआत में महात्मा गांधी ने सर्वोदय का विचार प्रस्तुत किया, जिसका अर्थ "सभी का उत्थान" है। यद्यपि यह विचार अपने समय की सामाजिक आवश्यकताओं पर आधारित था, फिर भी इसके सिद्धांत आज भी प्रासंगिक हैं और आधुनिक कार्यस्थलों की अनेक चुनौतियों का समाधान प्रस्तुत कर सकते हैं। यह शोधपत्र इस बात की पड़ताल करता है कि गांधीवादी सर्वोदय दर्शन को किस प्रकार आधुनिक कार्यस्थलों में लागू किया जा सकता है। इसमें सरल, व्यावहारिक विचारों को प्रस्तुत किया गया है, जो सामंजस्य, सहयोग और सामूहिक विकास को प्रोत्साहित कर सकते हैं। यह शोध एक सतत प्रक्रिया में है, और अभी कई आयामों की खोज की जानी बाकी है।

कुंजी शब्द - सर्वोदय, गांधीवादी दर्शन, आधुनिक कार्यस्थल, सार्वभौमिक उत्थान, कार्यस्थल सामंजस्य, सामूहिक विकास।

भूमिका

हालाँकि मानवता ने हमेशा एक आदर्श समाज का सपना देखा है, लेकिन इसे कभी पूरी तरह हासिल नहीं किया गया। आज का समाज पूँजीवाद के प्रभाव में दो वर्गों में विभाजित हो चुका है - धनाढ्य और वंचित। यह विभाजन असमानता, वैमनस्य और अशांति को जन्म देता है।

दार्शनिकों और नेताओं ने लंबे समय से आदर्श समाज की कल्पना की है, लेकिन उनके विचार अक्सर अपने समय की चुनौतियों तक सीमित रहे हैं।

एक सार्वभौमिक सिद्धांत जो समय से परे है, वह है **स्वर्ण नियम**—"दूसरों के साथ वैसा ही व्यवहार करें जैसा आप अपने लिए चाहते हैं।" हालाँकि यह सैद्धांतिक रूप से नैतिक है, लेकिन सामाजिक विभाजन इसके अनुप्रयोग में बाधा डालते हैं।

सर्वोदय का मूल सिद्धांत

महात्मा गांधी ने सर्वोदय को चार बुनियादी सिद्धांतों पर आधारित किया:

1. **सत्य (*Satya*):** विचार, वाणी और कर्म में सामंजस्य। गांधीजी का मानना था कि सत्यनिष्ठा सामाजिक भ्रष्टाचार का प्रतिकार करती है।
2. **अहिंसा (*Ahimsa*):** विचार, वाणी और कर्म में अहिंसा का पालन, किसी भी रूप में हिंसा का त्याग।
3. **सत्याग्रह (*Satyagraha*):** सत्य और धैर्य के माध्यम से परिवर्तन लाने की अहिंसक पद्धति।
4. **सार्वभौमिक कल्याण (*Sarvodaya*):** सभी के लिए समान प्रगति और उत्थान।

गांधीजी का मानना था कि "पृथ्वी सभी की आवश्यकताओं को पूरा कर सकती है, लेकिन सभी के लालच को नहीं।" एक सर्वोदय समाज में लोग सादगी और उच्च विचारों को अपनाते हैं तथा ईमानदारी से श्रम करते हैं। यह मॉडल संपत्ति को एक ट्रस्टीशिप (न्यासिता) दृष्टिकोण से देखता है, जिससे सभी को समान अवसर मिलते हैं।

आधुनिक कार्यस्थलों में सर्वोदय के सिद्धांतों की प्रासंगिकता

गांधीवादी सर्वोदय दर्शन आधुनिक कार्यस्थलों में विभिन्न तरीकों से लागू किया जा सकता है:

1. समानता और समावेशिता

- कार्यस्थलों पर लैंगिक, जातीय, धार्मिक और सामाजिक विविधता को बढ़ावा देना।
- समान कार्य के लिए समान वेतन नीति लागू करना।
- नियुक्ति और पदोन्नति में पारदर्शिता बनाए रखना।

2. न्यायसंगत संसाधन वितरण

- कर्मचारी लाभ (*Employee Benefits*) योजनाओं को अधिक समावेशी बनाना।
- न्यासिता (*Trusteeship*) के सिद्धांतों पर आधारित आर्थिक नीतियों को अपनाना।

3. स्थिरता और पर्यावरण संरक्षण

- हरित ऊर्जा (*Green Energy*) और पर्यावरण अनुकूल नीतियों को अपनाना।
- अपशिष्ट प्रबंधन और संसाधनों के पुनर्चक्रण को प्राथमिकता देना।

4. सामुदायिक कल्याण और नैतिक नेतृत्व

- कंपनियों को कॉर्पोरेट सोशल रिस्पॉन्सिबिलिटी (*CSR*) के तहत सामुदायिक विकास में योगदान देना।
- कर्मचारियों के मानसिक स्वास्थ्य और कल्याण पर ध्यान केंद्रित करना।

5. विकेंद्रीकृत निर्णय-प्रक्रिया और स्व-निर्भरता

- कर्मचारियों को निर्णय लेने की प्रक्रिया में शामिल करना।
- छोटे और स्व-निर्भर उत्पादन इकाइयों को प्रोत्साहित करना।

आधुनिक कार्यस्थलों में सर्वोदय की प्रासंगिकता

आधुनिक कार्यस्थलों में सर्वोदय की विचारधारा को निम्नलिखित तरीकों से लागू किया जा सकता है:

- **समानता और समावेशिता:** कार्यस्थलों पर विविधता को बढ़ावा देना और लिंग, जाति, धर्म आदि के आधार पर भेदभाव को समाप्त करना।
- **न्यायसंगत वेतन और संसाधनों का वितरण:** सभी कर्मचारियों को समान अवसर प्रदान करना और श्रम के महत्व को स्वीकार करना।
- **स्थिरता और पर्यावरण संरक्षण:** कार्बन उत्सर्जन को कम करने और हरित ऊर्जा को अपनाने की पहल करना।
- **सामुदायिक कल्याण:** कर्मचारियों के स्वास्थ्य और मानसिक शांति का ध्यान रखना।
- **विकेंद्रीकृत निर्णय-प्रक्रिया:** कर्मचारियों को निर्णय लेने की प्रक्रिया में शामिल करना और सहयोग को बढ़ावा देना।

शोध विधि

इस शोध में **300 उत्तरदाताओं** पर किए गए एक सर्वेक्षण का विश्लेषण किया गया, जो विभिन्न आयु, लिंग, शिक्षा और रोजगार समूहों से संबंधित थे। इसमें निम्नलिखित बिंदुओं पर ध्यान केंद्रित किया गया:

- गांधीवादी विचारों की जागरूकता
- सर्वोदय के सामाजिक प्रभाव

- व्यक्तिगत विश्वास और व्यवहार
- कार्यस्थल में सर्वोदय के प्रभाव

मुख्य निष्कर्ष

निष्कर्ष	विवरण
गांधीवादी दर्शन की जागरूकता	शिक्षित और पुरुष प्रतिभागियों में जागरूकता अधिक थी।
शिक्षण प्रणाली में सर्वोदय का समावेश	70% उत्तरदाताओं ने शिक्षा में गांधीवादी मूल्यों को शामिल करने का समर्थन किया।
युवा पीढ़ी की रुचि	कुछ युवाओं ने रुचि दिखाई, जबकि कई लोग तटस्थ थे, जिससे बेहतर प्रचार की आवश्यकता स्पष्ट हुई।
कार्यस्थलों में सर्वोदय का प्रभाव	नैतिकता, समावेशिता और स्थिरता को बढ़ावा देता है।
व्यक्तिगत विश्वास और व्यवहार	समुदाय कल्याण और सादगी को व्यापक रूप से महत्व दिया गया।

आधुनिक समाज और कार्यस्थल के लिए निहितार्थ

- सर्वोदय दर्शन **सामूहिक विकास, कार्यस्थल संतुलन और मानसिक शांति** को बढ़ावा देता है।
- न्यासिता (*Trusteeship*) मॉडल कंपनियों को **सामाजिक उत्तरदायित्व (CSR)** अपनाने में सहायक हो सकता है।
- युवा पीढ़ी में इसकी जागरूकता बढ़ाने के लिए **शिक्षा प्रणाली** में सर्वोदय के मूल्यों को शामिल करना आवश्यक है।

सर्वोदया और वर्तमान समाज

गांधी जी का यह विचार न केवल कार्यस्थल बल्कि पूरे समाज में लागू किया जा सकता है। सर्वोदया को अपनाने से सामाजिक न्याय, शिक्षा, स्वास्थ्य और पर्यावरण के क्षेत्र में सुधार किया जा सकता है।

1. **शिक्षा और सर्वोदया:** शिक्षा में सर्वोदया के सिद्धांतों को अपनाने से नैतिक और सामाजिक मूल्यों की समझ विकसित होगी। गांधी जी के अनुसार, शिक्षा केवल ज्ञान प्राप्ति का साधन नहीं, बल्कि व्यक्तित्व निर्माण का एक तरीका है।
2. **स्वास्थ्य और सर्वोदया:** स्वास्थ्य सेवाओं में समानता और किफायती चिकित्सा सेवाओं को बढ़ावा देकर सर्वोदया के विचार को लागू किया जा सकता है।
3. **पर्यावरण संरक्षण:** गांधी जी ने हमेशा सादगी और पर्यावरण संरक्षण की बात की। सर्वोदया के माध्यम से हम टिकाऊ विकास को बढ़ावा दे सकते हैं।

सर्वोदया के लाभ और चुनौतियाँ

सर्वोदया का मुख्य लाभ यह है कि यह समाज में समानता और समरसता लाने में मदद करता है। लेकिन इसकी कुछ चुनौतियाँ भी हैं:

1. **व्यावसायिक दुनिया में कठिनाई:** आज का बाजार प्रतिस्पर्धा पर आधारित है, जहाँ लाभ सर्वोपरि होता है। इस स्थिति में सर्वोदया के सिद्धांतों को लागू करना चुनौतीपूर्ण हो सकता है।
2. **मानसिकता में परिवर्तन की आवश्यकता:** समाज और संगठनों को सर्वोदया को अपनाने के लिए अपनी मानसिकता बदलनी होगी।
3. **सरकारी नीतियों का अभाव:** यदि सरकारें सर्वोदया आधारित नीतियाँ लागू करें, तो यह अधिक प्रभावी हो सकता है।

निष्कर्ष

गांधी जी के सर्वोदय सिद्धांत आज भी समाज और कार्यस्थल में नैतिकता, समानता और सहयोग के माध्यम से सकारात्मक परिवर्तन ला सकते हैं। सत्य, अहिंसा और सामूहिक कल्याण जैसे गांधीवादी मूल्य केवल एक दर्शन भर नहीं हैं, बल्कि एक ऐसे व्यवहारिक मार्गदर्शन हैं जो कार्यस्थलों और सामाजिक संरचनाओं में समावेशिता, न्याय और नैतिकता को सुदृढ़ कर सकते हैं। जब संगठन इन मूल्यों को अपनाते हैं, तो वे एक ऐसे वातावरण का निर्माण करते हैं जहाँ पारदर्शिता, आपसी सहयोग और समान अवसरों को प्राथमिकता दी जाती है, जिससे कार्यस्थल अधिक उत्पादक और मानवीय बनते हैं।

हालाँकि, सर्वोदय की व्यापक स्वीकृति में कुछ चुनौतियाँ भी मौजूद हैं, जैसे कि आधुनिक उपभोक्तावादी प्रवृत्तियाँ जो भौतिक सफलता को नैतिकता और सामूहिक कल्याण से अधिक महत्व देती हैं। इसके अतिरिक्त, जागरूकता की कमी और व्यावसायिक प्रतिस्पर्धा भी सर्वोदय के सिद्धांतों को अपनाने में बाधा बन सकती हैं। इन चुनौतियों का समाधान शिक्षा और संगठनात्मक

संस्कृति में सर्वोदय के मूल्यों को एकीकृत करके किया जा सकता है। यदि कंपनियाँ अपने प्रबंधन और निर्णय-निर्माण प्रक्रियाओं में सत्य, अहिंसा और समानता को शामिल करें, तो वे अधिक जिम्मेदार और नैतिक उद्यम बन सकती हैं।

इसके अलावा, सर्वोदय केवल कार्यस्थल तक सीमित नहीं है, बल्कि यह समाज में भी बड़े पैमाने पर बदलाव ला सकता है। जब व्यक्ति व्यक्तिगत और पेशेवर जीवन में इन मूल्यों को अपनाते हैं, तो इससे सामाजिक समरसता को बढ़ावा मिलता है और एक अधिक न्यायसंगत दुनिया का निर्माण संभव होता है। गांधी जी का यह दर्शन आने वाली पीढ़ियों के लिए भी प्रेरणास्रोत बन सकता है, जिससे वे एक अधिक नैतिक, सहिष्णु और समानता पर आधारित समाज की दिशा में कार्य कर सकें। इसलिए, यदि हम सर्वोदय को अपने जीवन और कार्यस्थलों में प्रभावी रूप से लागू करें, तो यह न केवल हमारे व्यक्तिगत और व्यावसायिक जीवन को सुधार सकता है, बल्कि संपूर्ण विश्व को भी एक अधिक शांतिपूर्ण और न्यायपूर्ण स्थान बना सकता है।

सन्दर्भलेखन

1. Aakhoon, S. A. (2022). Social thoughts of Mahatma Gandhi. International Journal of Creative Research Thoughts, 10(4). September 3, 2023.
2. Bullock, Z. (2024). From labor to value: Marx, Ruskin, and the critique of capitalism. victorianweb.org. Retrieved September 21, 2024.
3. Epstein, G. M. (2010). Good without God: What a billion nonreligious people do believe. HarperCollins. ISBN: 9780061670121 ISBN 10: 006167012X.
4. Gandhi, M. K. (1927). An autobiography or the story of my experiments with truth. Navajivan Trust, ASIN: B09CVCZD44.
5. Henderson, W. (2000). John Ruskin's political economy. Routledge. ISBN 9780415757683.
6. Kaur, A. (2022). Doctrine of trusteeship and Sarvodaya: Relevance of Gandhian philosophy in modern economy. International Journal of Creative Research Thoughts, 10(7).
7. Kronsell, A., Bäckstrand, K., Lövbrand, E., & Khan, J. (2010). Environmental politics and deliberative democracy: Examining the promise of new modes of governance. Routledge.
8. Narayanasamy, S. (2003). The Sarvodaya movement: Gandhian approach to peace and non-violence. Mittal Publications. ISBN-10 : 9788170998778 ISBN-13 : 978-8170998778.
9. Parida, P. (2019). Relevance of Gandhianism in today's world. The Rock Bottom, The Times of India. Retrieved August 29, 2023, from https://timesofindia.indiatimes.com/blogs/the-rock-bottom/relevance-of-gandhianism-in-todays-world/

10. Ruskin, J. (1862). Unto this last. (Modern edition: Penguin Classics). ISBN-10 0140432116, ISBN-13 978-0140432114
11. Sharath, S. S. (2006, February 12). A confluence by the Cauvery. The Hindu. Retrieved September 1, 2023, from https://archive.ph/20130411021047/http://www.hindu.com/2006/02/12/stories/2006021203020400.htm#selection-461.48-461.177
12. Shastri, A., & Gupta, P. (2022). Sarvodaya: The Gandhian philosophy for 21st century. International Journal of Advanced Research, 10(07), 01-05. https://doi.org/10.21474/IJAR01/14996
13. Singh Jeliyang, A. (2016). Mahatma Gandhi's socio-economic thoughts on economic policy making. Smart Moves Journal Ijellh, 4(9). Retrieved from https://www.ijellh.com/index.php/OJS/article/view/1626
14. Singhania, S., & Mustafiz, T. (2023). Relevance of Gandhian principles or philosophy in the 21st century. Geeks for Geeks. Retrieved September 3, 2023, fromhttps://www.geeksforgeeks.org/relevance-of-gandhian-principles-in-the-21st-century/
15. Taylor, T. (2014, June). Economics and morality. Finance & Development, 51(2). IMF. Retrieved July 1, 2024.
16. Team Foundit. (2016). 5 workplace lessons to learn from Mahatma Gandhi. Foundit. Retrieved August 29, 2023, from https://www.foundit.in/career-advice/5-workplace-lessons-to-learn-from-mahatma-gandhi/
17. Thompson, D. (2013, December 17). Why economics is really called 'the dismal science'. The Atlantic. Retrieved July 17, 2024.
18. Thompson, E. P. (1967). Time, work-discipline, and industrial capitalism. Past & Present, 38, 56-97.

*फैकल्टी - बिज़नेस, हायर कॉलेजेज ऑफ टेक्नोलॉजी, संयुक्त अरब अमीरात।
**एसोसिएट प्रोफेसर, इंस्टीट्यूट ऑफ प्रोफेशनल एजुकेशन एंड रिसर्च, भारत।